



ॐ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

आरव शर्मा की राजयोग रिपोर्ट

नमूना रिपोर्ट • काल्पनिक व्यक्ति

Aarav Sharma

15 अगस्त 1991 • 06:40

Jaipur, Rajasthan, India



IASTROGURU

उन्नत iAstroGuru इंजन से गणना
बहु-स्तरीय गुणवत्ता जाँच

लग्न: उगती राशि। दशा: ग्रहों से जुड़ी समय की अवधि। नक्षत्र: चंद्रमा के पथ का एक भाग।

इस रिपोर्ट में

01 एक नज़र में आपके योग

04 महापुरुष और अन्य योग

02 केंद्र और त्रिकोण: राजयोग कैसे बनते हैं

05 आपके योग कब फल देते हैं

03 आपके राजयोग और धन योग

06 उनका पूरा लाभ

07 यह रिपोर्ट कैसे बनी

01 एक नज़र में आपके योग

आरव, योग ग्रहों का शास्त्रीय संयोग है। राजयोग प्रतिष्ठा और सफलता से जुड़े हैं, धन योग धन से। योग एक संभावना है, वादा नहीं: उसका बल उसके ग्रहों की गरिमा पर निर्भर करता है और वह उनकी दशाओं में फल देता है।

आपकी कुंडली में क्या है

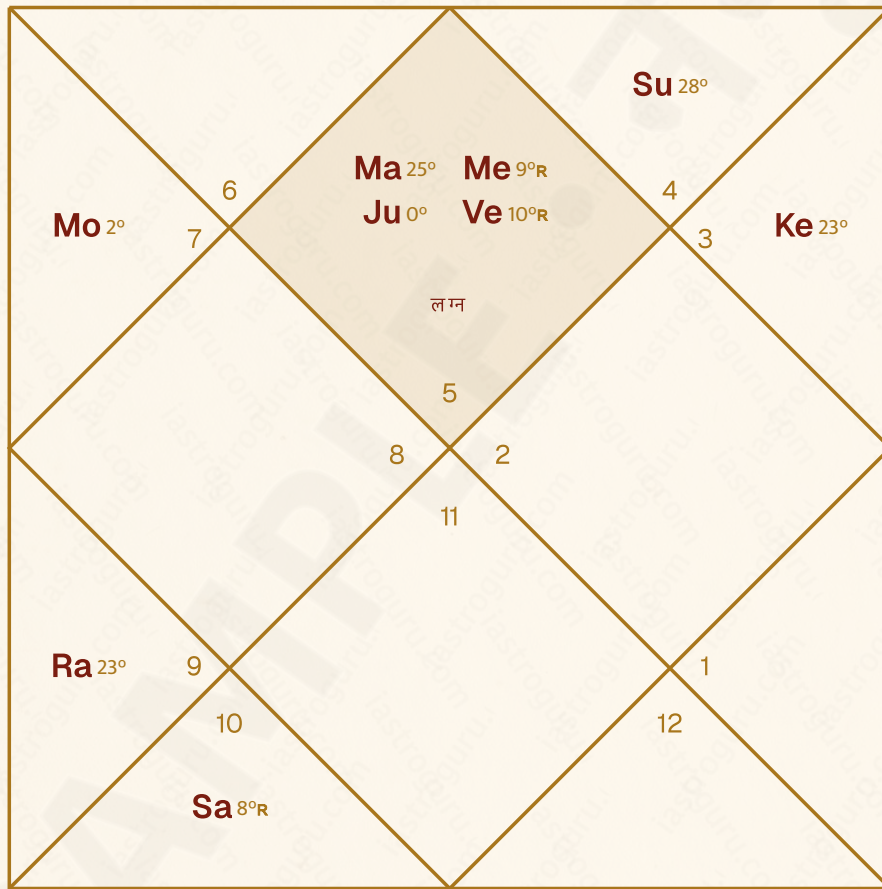
आपकी कुंडली में गुरु, मंगल और शुक्र के आपके लग्न में साथ होने से बना राजयोग है; गुरु, बुध और मंगल से बना धन योग है; सिंह लग्न के सबसे मददगार ग्रह, योगकारक, के रूप में मंगल हैं; और छोटे भाव में शनि से बना हर्ष योग है। केमद्रुम, एक चंद्र योग, बनता है और भंग होता है, जो स्वयं चंद्रमा के चारों ओर सहारे का संकेत है।

एक कुंडली के लिए यह असाधारण रूप से समृद्ध समूह है, और सभी राजयोग और धन योग एक ही जगह हैं: आपका अपना पहला भाव। आपकी सफलता आपके स्वभाव, उपस्थिति और प्रयास में लिखी है।

♦ राजयोग, धन योग, योगकारक और हर्ष योग, और मुख्य योग सब आपके लग्न में उदित ।

बल पर एक ईमानदार टिप्पणी

इनमें से कुछ ग्रहों के साथ शर्ते जुड़ी हैं। आपके गुरु अस्त हैं, सूर्य के अंश के बहुत पास। आपके शुक्र स्वाभाविक शत्रु की राशि में वक्री हैं, और आपके बुध वक्री और अस्त हैं। मंगल मित्र की राशि में सहज हैं। व्यवहार में इसका अर्थ है कि योग वास्तविक हैं पर प्रयास माँगते हैं: वे अपने आप नहीं आते, काम और धैर्य का फल देते हैं।



आपकी गणना की गई कुंडलियाँ। दशमांश (D10) लग्न तुला है। दशमांश करियर और पद की वर्ग कुंडली है।

02 केंद्र और त्रिकोण: राजयोग कैसे बनते हैं

नियम

पराशर का नियम सरल है। केंद्र, यानी पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ भाव, कुंडली के स्तंभ हैं; त्रिकोण, यानी पहला, पाँचवाँ और नौवाँ भाव, उसका भाग्य हैं। जब किसी केंद्र का स्वामी किसी त्रिकोण के स्वामी से मिलता है, तो राजयोग बनता है।

आपके सिंह लग्न के लिए सूर्य पहले भाव के, मंगल चौथे और नौवें के, शनि छठे और सातवें के, शुक तीसरे और दसवें के, और गुरु पाँचवें और आठवें भाव के स्वामी हैं। इसलिए आपके केंद्र के स्वामी सूर्य, मंगल, शनि और शुक हैं, और त्रिकोण के स्वामी सूर्य, गुरु और मंगल।

मंगल, आपके योगकारक

मंगल चौथे भाव, एक केंद्र, और नौवें भाव, एक त्रिकोण, दोनों के स्वामी हैं। जो ग्रह एक साथ केंद्र और त्रिकोण का स्वामी हो, उसे योगकारक कहते हैं: वह अपने आप में राजयोग है। आपके मंगल सिंह में, आपके पहले भाव में, पूर्वा फाल्गुनी चरण 4 में, मित्र की राशि में बैठे हैं, जो उन्हें प्रबल और सक्रिय योगकारक बनाता है। आपके लिए भाग्य कर्म के पीछे चलता है।

- ♦ आपके चौथे और नौवें भाव के स्वामी मंगल आपके योगकारक हैं और आपके अपने लग्न में बैठे हैं।

03 आपके राजयोग और धन योग

आपके लग्न का राजयोग

आपके पाँचवें भाव के स्वामी गुरु, चौथे और नौवें के स्वामी मंगल और दसवें के स्वामी शुक्र के साथ, सभी सिंह में आपके पहले भाव में बैठे हैं। पाँचवाँ और नौवाँ त्रिकोण हैं, चौथा और दसवाँ केंद्र, और जिस पहले भाव में वे साथ हैं वह दोनों हैं। यह शास्त्रीय राजयोग है, जिसे परंपरा में पहचान, अधिकार और अपनी योग्यता से तरक्की से जोड़ा जाता है।

लग्न में दशमेश एक विशेष रंग जोड़ते हैं: करियर और पहचान एक हो जाते हैं, और लोग आपके काम को आपके नाम से जोड़ने लगते हैं। इस पैटर्न वाले बहुत-से लोग आगे चलकर नेतृत्व करते हैं, सलाह देते हैं या स्वतंत्र रूप से काम करते हैं।

धन योग

बुध आपके दूसरे और ग्यारहवें भाव, धन के दोनों भावों, के स्वामी हैं। वे पाँचवें और नौवें के स्वामी गुरु और मंगल के साथ आपके लग्न में बैठे हैं। धन के स्वामी का भाग्य के स्वामियों से मिलना धन योग बनाता है, जिसे परंपरा में प्रयास और अच्छे विवेक से कमाने और साधन बनाने से जोड़ा जाता है। ग्रहों का समूह वही है, इसीलिए आपके लिए प्रतिष्ठा और आय साथ-साथ बढ़ते हैं।

- ♦ एक समूह, दो योग: राजयोग और धन योग आपके लग्न में साथ हैं, इसलिए प्रतिष्ठा और आय साथ बढ़ते हैं।

04 महापुरुष और अन्य योग

हर्ष योग

आपके छठे भाव के स्वामी शनि छठे भाव में ही, अपनी राशि मकर में बैठे हैं। कठिन भाव का स्वामी कठिन भाव में विपरीत राजयोग बनाता है; छठे भाव में इसे हर्ष योग कहते हैं। शास्त्र इसे अच्छा सेहत, साहस और विरोधियों पर विजय देने वाला बताते हैं: विपत्ति का बल में बदलना। शनि के गरिमापूर्ण होने से यह एक प्रबल उदाहरण है।

आपकी कुंडली में कोई महापुरुष योग नहीं बनता, क्योंकि पाँचों में से कोई ग्रह केंद्र में अपनी या उच्च राशि में नहीं है। सबसे प्रबल दावेदार मंगल मित्र की राशि में हैं, जो गर्मजोशी भरी स्थिति है पर इन योगों को चाहिए गरिमा नहीं।

05 आपके योग कब फल देते हैं

योग मुख्य रूप से उसे बनाने वाले ग्रहों की दशाओं में फल देता है।

अभी: गुरु महादशा

आप 26 अगस्त 2027 तक गुरु महादशा में हैं। गुरु आपके राजयोग और धन योग दोनों के हिस्से हैं, इसलिए 2011 से के वर्ष परंपरा में वह समय रहे हैं जब ये योग सीखने, सलाह और विकास के माध्यम से पहली बार प्रकट हुए। अंतिम अंतर्दशा, राहु अंतर्दशा, अगले अध्याय से पहले नई दिशाएँ परखने का समय है।

आगे: शनि महादशा, 2027 से 2046

शनि आपका हर्ष योग बनाते हैं, इसलिए 26 अगस्त 2027 से उनकी उन्नीस वर्ष की महादशा परंपरा में स्थिर, टिकाऊ तरक्की का समय है। इसके भीतर आपके योग ग्रहों की अंतर्दशाएँ उभरकर आती हैं: अगस्त 2030 से मई 2033 तक बुध, जो आपका धन योग सक्रिय करते हैं; जून 2034 से अगस्त 2037 तक शुक्र, जो आपके दशमेश और राजयोग को सक्रिय करते हैं; फ़रवरी 2040 से अप्रैल 2041 तक आपके योगकारक मंगल; और फ़रवरी 2044 से अगस्त 2046 तक गुरु।

उसके बाद 2046 से 2063 तक बुध महादशा चलती है, आपके धन के स्वामी का लंबा काल।

- ◆ इन समयों पर ध्यान दें: आपकी शनि महादशा के भीतर बुध 2030-2033, शुक्र 2034-2037 और मंगल 2040-2041।

06 उनका पूरा लाभ

योग आपके माध्यम से काम करते हैं

क्योंकि आपके सभी मुख्य योग लग्न में हैं, वे इस पर प्रतिक्रिया देते हैं कि आप कैसे सामने आते हैं। दिखने वाली जिम्मेदारी लें, अपने काम पर अपना नाम रखें, और अवसर आने पर पहला कदम उठाएँ: लग्न में योगकारक मंगल इसी का फल देते हैं।

क्योंकि गुरु अस्त हैं और बुध व शुक्र वक्री हैं, विचारों को दूसरा मसौदा दें और बड़े निर्णयों से पहले सलाह लें। वक्री ग्रह अक्सर अपना सर्वश्रेष्ठ दूसरे प्रयास में देते हैं। और क्योंकि शनि हर्ष योग बनाते हैं, शनि के वर्षों में किया गया कठिन, साधारण दिखने वाला काम ही वह नींव है जिस पर राजयोग खड़ा होता है।

07 यह रिपोर्ट कैसे बनी

हर योग iAstroGuru Engine ने केंद्र और त्रिकोण के स्वामित्व, योगकारक, धन, विपरीत और महापुरुष योगों के पाराशरी नियमों से निकाला है, लाहिड़ी अयनांश और संपूर्ण राशि भाव के साथ।

पाठ इन्हीं गणना किए गए तथ्यों से लिखा गया और जारी करने से पहले कुंडली से अपने आप मिलाकर जाँचा गया। योग एक संभावना बताता है, कभी गारंटी नहीं, और यहाँ कुछ भी करियर, पैसे संबंधी या कानूनी सलाह नहीं है। यह नमूना एक काल्पनिक व्यक्ति, आरव शर्मा, के लिए तैयार किया गया है।

उन्नत iAstroGuru इंजन से गणना, भरोसेमंद संदर्भों से सटीकता के लिए परखी गई।
इन गणनाओं से स्वचालित व्याख्या, हर रिपोर्ट हमारी बहु-स्तरीय गुणवत्ता जाँच से परखी गई।



Shiv Shakti Software Solutions (iAstroGuru)

Digitally signed on 9 Oct 2026, 14:35 IST

Document ID IAG-C6B8-KGQM-BAKS